Historicity Research Journal
Volume 1 | Issue 2 | Oct 2014

ISSN:- 2393-8900

Research Article

"सरदार पटेल को एक श्रद्धांजली"

आराधना कुमारी

अध्यक्षा एवं सहायक प्रोफेसर , इतिहास विभाग , जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कालेज,
अमरोहा (उ.प्र.)

***सारांश* :-**

सरदार पटेल का नाम संसार के महान राष्ट्र–निर्माताओं में सदा ही श्रद्धा के साथ लिया जाता है। एक सामान्य घराने से निकलकर उन्होनें अपनी निर्भिकता, देशभक्ति और संगठनात्मक शक्ति के बल पर अपने जीवन में वो कार्य कर दिया जो बड़े–बड़े राजनेताओं के लिए भी सुगम न था।

***प्रस्तावना* :-**

सरदार पटेल का गौरवशाली राजनैतिक जीवन गाँधी जी के शिष्यत्व में आरम्भ हुआ। गाँधी जी को अपना आदर्श मानकर ही सरदार पटेल ने अपने सारे आन्दोलनों का श्री गणेश किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के तीन सबसे बड़े नायकों में अपने आपको स्थापित किया – महात्मा गाँधी, पं. जवाहरलाल नेहरू एवं सरदार वल्लभ भाई पटेल। महात्मा गाँधी एवं पं. जवाहरलाल नेहरू ने अपने आप भी बहुत कुछ लिखा है और उनके विषय में दूसरों ने भी बहुत कुछ लिखा है। पटेल इस दृष्टि से काफी उपेक्षित रहे हैं या कहें कि एक विचारधारा के प्रभाव के कारण पटेल के कृतत्व को उपेक्षा झेलनी पड़ी। पटेल गाँधी जी के शिष्य होते हुए भी कॉंग्रेसी विचारधारा से पूर्णतया सहमत नहीं थे। इसी विचारधारा के प्रभाव के कारण ही आज हमारे इतिहास में पटेल के योगदान को पूर्ण न्याय नही मिल सका। सम्पूर्ण देश में आजादी से पूर्व एवं आजादी के बाद कॉंग्रेस का प्रभाव अधिक होने के कारण अधिकांशतः कॉंग्रेस समर्थित या कॉंग्रेसवादियों को ही भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में अत्यधिक उजागर किया गया है।

पटेल की उपेक्षा का यह प्रश्न आजादी के बाद से लगातार चर्चाओं में रहा है। आज की "Statue of Unity" ने इस चर्चा को और चर्चित कर दिया है।

सरदार पटेल को भारत का बिस्मार्क कहा जाता है लेकिन उनकी सफलताएं उनसे भी बड़ी हैं, क्योंकि उन्होनें ऐसे माहौल में काम किया जो बहुत कठिन था। उनके इस कार्य के प्रभाव और विस्तृत क्षेत्र के कारण ही सरदार पटेल को लौह पुरूष कहा गया है, मेरे हिसाब से इस उपाधि में जो सार निहित है वह – पटेल ने इतने विखंडित भारत को संगठन के लौह आवरण में बांधकर एक संगठित और मजबूत भारत का निर्माण किया। सरदार पटेल एक सच्चे देशभक्त थे उनका सपना एक मजबूत और खुशहाल भारत का था जिसका विश्व में डंका बजे।

खुशहाल और संगठित भारत के निर्माण के लिए उन्होनें छोटी–छोटी रियासतों और जागीरों, जहां अलग–अलग भाषाएँ, परम्पराएँ एवं धर्म थे, को एक देश के रूप में एकीकृत किया। यहाँ आज विश्व की 17.5 प्रतिशत आबादी रहती है। उन्होनें असम्भव दिखने वाले कार्य को उस समय अंजाम दिया जब बिस्टन चर्चिल इस महाद्वीप को हिन्दुस्तान एवं पाकिस्तान और छोटे–छोटे रजवाड़ों के समूह के रूप में बाँटना चाहते थे अगर सरदार पटेल निरंतर प्रयास न करते तो आज भारत की जगह बहुत सारे छोटे–छोटे देश होते जो एक दूसरे से लड़ते रहते। जम्मू–कश्मीर, हैदराबाद और जूनागढ़ ने प्रतिरोध किया, पर पटेल ने अपने मजबूत इदरों से स्पष्ट कर दिया कि भारत एक एकीकृत ईकाई बन कर रहेगा।[1]

सरदार पटेल के एकीकरण के इस प्रयास में नेहरू और माउण्टबेटन खुलकर उनके साथ खड़े नहीं हुए। वे हिचक रहे थे कि हैदराबाद से यदि जबरदस्ती की गई तो हिन्दु–मुस्लिम दंगे न हो जांए। यहाँ पटेल ने अपने मजबूत इरादों के कारण नरमी से पेश न आने का निर्णय लिया और हैदराबाद को भारत में मिलने के लिए मजबूर किया। उनका

मानना था कि यदि नरमी से पेश आए तो दिक्कत बढ़ेगी। इसी प्रकार कश्मीर के मामले में पटेल के विचार नेहरू से भिन्न थे।

परिस्थितिवश कहें या मन में विश्व शान्ति के दूत बनने की महत्वाकांक्षा के कारण नेहरू ने कश्मीर का मुद्दा पटेल से लेकर स्वयं अपने हाथ में ले लिया और समस्या यहीं से आरम्भ हुई जो अब तक और विकृत ही होती जा रही है।

के.एम. मुंशी लिखते हैं कि "जवाहरलाल नेहरू ने यदि शेख अब्दुल्ला के बहकावे में आकर यदि जम्मू कश्मीर का जिम्मा पटेल से न लिया होता तो समस्या इतनी न होती जितनी आज है।" सरदार पटेल ने भी कई बार कहा कि अगर नेहरू ने उन्हें कश्मीर को संभालने दिया जाता तो समस्या इनती न बढ़ती। उन्होनें शेख अब्दुल्ला द्वारा किए गए वायदे पर शंका व्यक्त की थी जिसे नेहरू ने अनदेखा कर दिया।

इसी प्रकार अन्य कई राजनैतिक मुद्दों को लेकर पटेल एवं नेहरू में बहुत मतभेद थे। इन मतभेदों को दूर करने के लिए गाँधी जी ने दोनों को समझाने का प्रयास किया, इस प्रयास के बाद पटेल ने सदैव गाँधी जी को दिए हुए अपने वचन का पालन किया किन्तु नेहरू जी ने गाँधी जी से वार्तालाप करके उसका पालन नहीं किया और नेहरू अपने वचन से मुकर गए। पद की आकांक्षा ने नेहरू जी को विवश किया होगा ऐसा बहुत से लेखक मानते हैं।

गाँधी जी आजादी के बाद कॉंग्रेस के अस्तित्व को परिवर्तित करना चाहते थे परन्तु नेहरू की आकांक्षाओं ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। बहुत से मौकों पर नेहरू जी ने गाँधी जी द्वारा दिए गए निर्देशों का उल्लंघन किया परन्तु गाँधी जी उनका विरोध नहीं कर पाए। इसके पीछे क्या कारण रहा होगा यह तो आज भी शोध का विषय है।

गाँधी जी ने अपनी मृत्यु के दिन सरदार पटेल से कहा था कि कॉंग्रेस का अस्तित्व स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए ही था एक राजनैतिक ईकाई के रूप में अब उसकी आवश्यकता नहीं है। कॉंग्रेस को अब अपने आपको समाज कल्याण के कार्य में सीमबद्ध कर लेना चाहिए।[2]

गाँधी जी ने कभी भी कॉंग्रेस को एक राजनैतिक ईकाई के रूप में नही देखा और वे इसके साथ जुड़ते समय भी इसके लक्ष्य को सदैव ही परिलक्षित करते रहे। परन्तु गाँधी जी के विचारों को किनारे करते हुए नेहरू जी ने सत्ता में भागीदारी के लिए कॉंग्रेस को एक राजनैतिक ईकाई का रूप दिया और इसके लिए उन्होनें पटेल सहित कई गाँधीवादी विचारकों से मतभेद भी किए। देखा जाए तो नेहरू और पटेल के मतभेदों के बीच में यही एक कारण रहा। इन दोनों के आपसी मतभेद कई क्षेत्रों में थे "सरदार पटेल तथा नेहरू में सदा ही इस प्रकार के मतभेद रहे जिनका सम्बन्ध उनकी अपनी–अपनी निजी प्रकृति से था नेहरू जी, सरदार पटेल की प्रश्नों को हल करने की प्रणाली से असन्तुष्ट थे तथापि वह दोनों एक दूसरे को पूर्ण सहयोग देते थे।"[3]

सरदार पटेल पर कुछ कॉंग्रेसवादी विचारधारा के लोग साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का आरोप लगाते थे और उन्हें मुसलमानों का विरोधी सिद्ध करने का प्रयास करते थे उसके पीछे और कुछ नही अपितु उनकी राजनैतिक महत्वाकांक्षा ही थी।

इसके विपरीत स्थिति यह थी कि सरदार पटेल कभी भी मुस्लिम विरोध नहीं रहे थे वे सदैव भारत और भारतीय के विकास के लिए प्रयास करते रहे। अल्पसंख्यकों को लेकर सरदार पटेल का स्पष्ट मत था– अब देश का विभाजन पूरा हो चुका है आप कहते हमें इसे पुनः लाना चाहिए और दूसरा विभाजन करना चाहिए, यदि वह तरीका अपनाया जिसक परिणामस्वरूप देश का विभाजन हुआ, अगर इसे दोहराना है तो मै कहता हूँ कि जो उस तरह की चीजें चाहते हैं उनके लिए पाकिस्तान में जगह है यहाँ नहीं। यहाँ हम एक राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं, हम एक राष्ट्र की नींव रख रहे हैं और जो पुनः विभाजन चुनने वाले हैं तथा बिखराव के बीज बोना चाहते हैं उनके लिए कोई जगह नहीं होगी न ही कोई कोना है। दूसरी ओर कॉंग्रेस का विचार सदैव ही विभाजन की प्रक्रिया को इंगित करने का रहा। राजनैतिक स्थिरता के लिए उन्होनें आजादी से ही हिन्दु मुसलमान के इस नासूर पर सदैव खरोंचे की हैं।

सरदार ने मेव लोग जो अलवर से पाकिस्तान चले गये थे, की वापसी को लेकर मंत्रीमण्डल में काफी जोरदार प्रयास किया अस्वस्थ होने के बावजूद भी उन्होनें कॉंग्रेस कार्य समिति को अन्याय नहीं करने दिया।[4]

पण्डित नेहरू और सरदार के मतभेदों पर पद्दामि सीता रमैया ने लिखा है "इस प्रकार प्रायः आश्चर्य प्रकट किया जाता है कि यदि इन दोनों विरोधियों का सहयोग इतना सुखद, इतना उपयुक्त और इतना एकाकार न होता तो दिल्ली की केन्द्रीय सरकार की कैसी दशा होती।"[5]

गाँधी जी सदैव ही नेहरू से अधिक पटेल की प्रशंसा किया करते थे। 10 मई एवं 1 जून 1921 को गुजरात राजनैतिक परिषद (भड़ौच) में पटेल द्वारा दिए गए अध्यक्षीय भाषण को महात्मा गाँधी ने उन्हें विवेक एवं शौर्य का संगम माना था।[6]

महात्मा गाँधी और सरदार पटेल में अथाह प्रेम था। सरदार पटेल महात्मा गाँधी को बड़ा भाई और गुरू दोनों मानते थे। इसी प्रकार महात्मा गाँधी ने अपनी कृतज्ञता इन शब्दों में प्रकट की थी – "जेल में वल्लभ भाई ने मेरे प्रति जो स्नेह दिखाया उससे मुझे मेरी माता द्वारा प्रदर्शित स्नेह की याद आ रही है, मै नही जानता था कि उनके पास माँ का ह्रदय भी है।[7]"

पटेल के महान व्यक्तित्व को समझने के लिए भारत के प्रथम राष्ट्रपति के ये शब्द ही काफी हैं – "यदि आज एक ऐसे भारत का अस्तित्व है जिसके बारे में हम सोचते और बात करते हैं तो इसका अधिकतर श्रेय सरदार पटेल को है फिर भी हम प्रायः उन्हें भूल जाते हैं।"[8]

अखंड भारत के निर्माण सरदार पटेल को हमने भुला सा दिया है इसके पीछे बहुत सारी वजह हो सकती है। इनमें से मेरे अनुसार जो वजह है वह है आजादी से लेकर आज तक राजनैतिक रूप से काँग्रेस का एकाधिकार। काँग्रेसवादी विचारधारा ने प्रारम्भ से ही पटेल के प्रति मतभेदयुक्त व्यवहार रखा। इसी कारण साहित्य के संसार में जितने पृष्ठ गाँधी, नेहरू और काँग्रेस पर लिखा गए हैं उनका एक प्रतिशत भी पटेल के ऊपर नहीं है।

आज देश के सभी प्रदेशों में सक्रिय राजनैतिक दल और व्यक्ति राज्यों की सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष करते हैं और सत्ता भी प्राप्त करते हैं। सत्ता के मद में यह लोग यह भूल गए हैं कि इतने सारे राज्यों के संगठित समूह के निर्माता पटेल ही हैं।

देश की राजधानी में उनके लिए कोई भी स्मारक नहीं है यह जानकर भारत की राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमजोरी का अहसास होता है।

सरदार पटेल को क्षेत्रीय दृष्टि से देखना दृष्टि–दोष ही है। 'स्टेच्यु ऑफ यूनिटी' को सरदार पटेल की 63वीं पुण्यतिथि पर प्रस्तुत करना सिर्फ गुजरात का ही कर्तव्य नहीं है। पटेल सारे देश की धरोहर हैं। आज देश की युवा पीढ़ी में जोश और उत्साह भरने के लिए सरदार पटेल के व्यक्तित्व को मुख्य पटल पर लाना ही होगा। ऐसा करकर ही हम उनके योगदान के प्रति सच्ची श्रृद्धांजली अर्पित कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1.दैनिक समाचार पत्र "दैनिक जागरण" मुरादाबाद संस्करण दि0 28 दिसम्बर 2013
2.राष्ट्र निर्माता सरदार पटेल, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री पृष्ठ – 189
3.महात्मा गाँधी – प्यारेलाल (महात्मा गाँधी के प्राइवेट सेक्रेटरी)
4.मेरी कौन सुनेगा – महावीर त्यागी
5.राष्ट्र निर्माता सरदार पटेल, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री पृष्ठ – 192
6.महात्मा गाँधी – नरहरि पारिख पृष्ठ – 166
7.लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल – डॉ. लाल बहादुर सिंह चौहान पृष्ठ – 34
8.सरदार वल्लभ भाई पटेल – व्यक्ति और विचार विश्व प्रकाश गुप्ता, मोहनी गुप्ता